CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन धारा

(काव्य संग्रह)

स्वाति गोयल

RajGuru M... Shivala Varanasi Colle... Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

th, Shivala, Va asi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12:3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन धारा

(काव्य संग्रह)

स्वाति गोयल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation. Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक
शिवांक प्रकाशन,
दरियागंज, नई दिल्ली
ISBN : 978-93-93285-85-0

संस्करण: पहला, 2024
@ सर्वाधिकार सुरक्षित

जीवन धारा (काव्य संग्रह)
कवयित्री : स्वाति गोयल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन धारा

(काव्य संग्रह)

स्वाति गोयल

प्रकाशक

शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

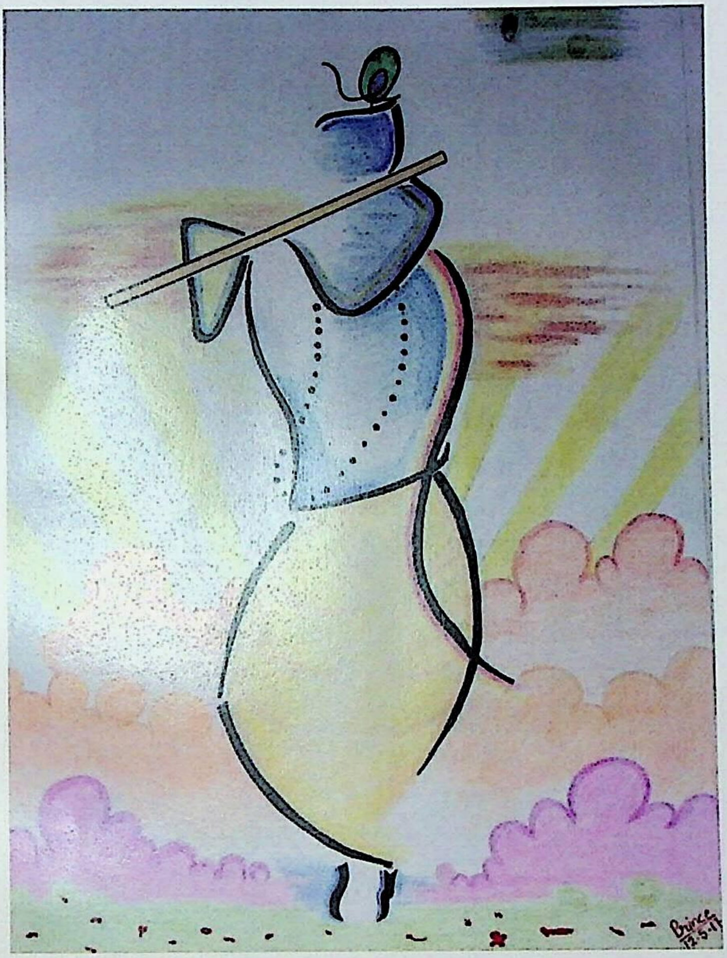

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रमणिका

1.	प्रस्तावना	10
2.	समीक्षात्मक शुभकामना	12
3.	सात्विक प्रलय	14
4.	कलम तलवार की	16
5.	अवारा शब्द	18
6.	होशियार समय	19
7.	धोखे का धुंआ	20
8.	सखानल	21
9.	उम्मीदों का पतझड़	22
10.	अर्धविराम	23
11.	हिचकी	24
12.	मिथ्या	25
13.	शरणागति	26
14.	गुरु-गोविन्द	27
15.	दोस्ती की हस्ती	28
16.	गुमशुदा बिंदी	29
17.	न्यारी-न्यारी	30
18.	सात्विक अहम	31
19.	अंगदान	32
20.	तलाश अपनी	33
21.	दोस्त और दास्तां	34
22.	दुल्हन	35
23.	मुसाफिर	36
24.	यादों की गठरी	37
25.	मैट्रो	38
26.	याराना	39

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

27.	ममता	40
28.	नारी	41
29.	होली	42
30.	आइना	43
31.	चरितार्थ	44
32.	मातृभाषा	45
32.	श्रीकृष्ण शरण	46
34.	दशहरा	47
35.	व्रत संस्कार	48
36.	अंधकार से उजाले की ओर	49
37.	नवयुग के स्तम्भ	50
38.	खुशी की मुस्कान	51
39.	दस्तक	52
40.	वक्त के साथ	53
41.	बदलता दौर	54
42.	कलम का प्रहार	55
43.	वक्त का इम्तिहान	56
44.	सफर	57
45.	बीते हुए पल	58
46.	रिश्तों की डोर	59
47.	धुंध	60
48.	अनजान डगर	61
49.	सखी की पुकार	62
50.	सपनों की आहट	63
51.	वक्त का पहिया	64
52.	बसंत	65
53.	अतित	66
54.	बलिदान	68
55.	पराजित विश्वास	69
56.	तितिक्षा	70

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

57.	पिता का दुलार	71
58.	उलझन	72
59.	चीनी कम	73
60.	जिन्दगी का सफर	74
61.	इजहार	75
62.	सदैव साथ	76
63.	पूर्णांजलि	77
64.	संवेदना	79
65.	वाह क्या बात है	97

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

प्रस्तावना

'जीवन धारा' काव्य संग्रह पुस्तक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह संग्रह जीवन की विभिन्न अनुभूतियों, संवेदनाओं और यादों का संकलन है, जो कविता के माध्यम से व्यक्त की गई हैं। प्रत्येक कविता एक अलग कहानी कहती है, जो हमारे जीवन के विविध पहलुओं को छूती है।

जीवन एक विस्तृत यात्रा है, जिसमें सुख-दुःख, आशा-निराशा, प्रेम और वियोग जैसे अनगिनत अनुभव समाहित हैं। इन अनुभवों को शब्दों में पिरोकर, इस संग्रह में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक कविता हमारे दैनिक जीवन के छोटे-छोटे लम्हों को जीवंत करती है, जो समय के साथ हमारे मन में बस जाते हैं और स्मृतियों के रूप में उभरते हैं।

इस संग्रह की कविताएँ न केवल व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक परिवेश को भी दर्शाती हैं। यहाँ पर कविताएँ उस अनोखी यात्रा का वर्णन करती हैं, जो आत्मा से शुरू होकर जीवन के विभिन्न पड़ावों से गुज़रती है और फिर आत्मा तक ही जाकर समाप्त होती है।

'जीवन-धारा' की कविताएँ आपको अपने ही जीवन की गहराइयों में झांकने के लिए प्रेरित करेंगी। यह आपको अपने अतीत की मधुर स्मृतियों में ले जाएँगी, वर्तमान की चुनौतियों से रूबरू कराएंगी और भविष्य के प्रति आशा की एक नई किरण प्रदान करेंगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस संग्रह को लिखते समय मेरा उद्देश्य केवल कविताएँ रचने का नहीं, बल्कि उन कविताओं के माध्यम से जीवन के अनुभवों को साझा करने का रहा है। मैं आशा करती हूँ कि, इस पुस्तक की कविताएँ आपके हृदय को छूएँगी और आपको अपने जीवन की अनमोल स्मृतियों को पुनः जीने का अवसर प्रदान करेंगी।

इस काव्य संग्रह को आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। आप सभी के सहयोग और प्रेम के बिना यह संग्रह संभव नहीं हो पाता। आशा है कि, 'जीवन-धारा' आपकी साहित्यिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाएगी।

धन्यवाद!
स्वाति गोयल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jagaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समीक्षात्मक शुभकामना

'जीवन धारा' काव्य संग्रह श्रीमती स्वाति गोयल जी द्वारा रचित पुस्तक की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। रचनाओं पर दृष्टि डालने पर अनुभूति होती है जैसे रचनाकार ने अपनी भावनाओं और विचारों को कविता में ढालने का एक सफल प्रयास किया है। किसी भी कवि, साहित्यकार, रचनाकार, कलाकार की मानसिक, बौद्धिक, आंतरिक चेतना जब बाह्य जगत से किसी भी रूप में प्रभावित होती है तो वह साहित्यिक, सांस्कृतिक, काव्य अथवा विविध कलाओं के रूप में अभिव्यक्त होती है। कोई भी रचनाकार संवेदनशील दार्शनिक, चिंतक, विचारक होता/होती है जो कि सामयिक विषयों को अपनी कृतियों, रचनाओं के माध्यम से कागज पर उकेरता है। श्रीमती स्वाति गोयल एक गृहिणी हैं लेकिन उनकी दृष्टि बाहरी जगत और वातावरण पर भी समान रूप से रहती है जैसा कविताओं को पढ़ने पर लगता है कि वे कितनी चिंतनशील हैं। उनके संवेदनशील मन ने विषयों पर चिंतन मंथन करते हुए अपनी अनुभूतियों को कविताओं में ढालकर प्रथम काव्य संकलन जीवन धारा के रूप में प्रस्तुत किया है। जो कि किसी रचनाकार के लिए अत्यंत सराहनीय, प्रशंसनीय कार्य है। सामान्य रूप से सभी कवियों, रचनाकारों की अपनी-अपनी लेखन कला एवं भाषा शैली होती है। इस संकलन में भाषा सहज सरल और सम्प्रेषणीयता की व्यापकता लिए हुए है। कविता लेखन में काव्य की अभिधा, लक्षणा, व्यंजना तीन शक्तियां होती हैं इस काव्य संकलन में अभिधा शक्ति का प्रभाव अधिक परिलक्षित होता है। रचनाकार के रचनाधर्मिता के आरंभिक चरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में होते हुए भी लेखन में गहराई और परिपक्वता दिखाई देती है। जहाँ तक रस, अलंकार, छंद का विषय है उसके लिए अभी और परिपक्वता की प्रतीक्षा रहेगी। जैसा कि काव्य संकलन का शीर्षक है जीवनधारा रचनाकार की व्यक्तिगत अनुभूतियों, स्मृतियों के साथ साथ सामान्य जन-जीवन के अनेक विषयों को समाहित किया है जो हमको अपने जीवन से जुड़े प्रतीत होते हैं यह कवयित्री की लेखन कुशलता एवं सफलता है। सभी 63 कविताओं के शीर्षक ध्यानाकर्षित करते हैं और पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित भी करते हैं। कविताएं जैसे अंधेरों से उजालों की ओर ले जाने का संकल्प हों। संग्रह जैसे कह रहा हो-

बाँधो किनारे इस जीवन नदी के
बह रही जो बंटकर असंख्य धार बनकर
कृपादृष्टि ईश्वर यदि आपकी हो
तो मिल जाये धारा महासिंधु चलकर

जीवन धारा अनेक कविताओं के माध्यम से हमारे जीवन प्रवाह को दिशा निर्देशित और प्रभावित करने का सफल प्रयास है।

पुस्तक की साज सज्जा कलात्मक और अत्यंत आकर्षक है। कविताओं के साथ उनका कलात्मक चित्रण संग्रह को अनूठी सुंदरता प्रदान करता है। संग्रह समग्र रूप से दर्शनीय एवं पठनीय है। श्रीमती स्वाति गोयल जी की प्रथम संग्रह के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आपकी लेखनी और सशक्त हो और भविष्य में और अच्छी रचनाएं के संग्रह प्रकाशित हों।

शुभेच्छु
गजेन्द्र सोलंकी
अंतरराष्ट्रीय कवि, गीतकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात्विक प्रलय

श्याम अब तो तेरा ही सहारा,
तेरे बिन हम निर्बल बेसहारा।

अब तो दिखाओ कोई ऐसा चमत्कार,
जिससे हो दूर दुनिया से हाहाकार।

ना कुछ सूझ रहा ना कुछ समझ आया,
पर सबको देख-देख दिल दुख पाया।

हे भगवान! कब रूकेगा अब ये क़हर,
जिसका है इंतज़ार सबको हर पहर।

अब तो ज़िन्दगी भी बेबस हो चली,
सब की चिंता में हर पल है धुली।

सोचा नहीं था ऐसा भी वक्त आएगा,
पैसा होकर भी खरचने को इंसान तरस जाएगा।

सुनते थे कि एक दिन प्रलय आएगी,
पता ना था कि ऐसे पल-पल तड़पाएगी।

अब तो ये समझो हर इंसान,
भर गये है श्मसान, कब्रिस्तान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब लड़ते रहे हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई,
पर भगवान ने समझा सबको एक समान मेरे भाई।

चलो मिलकर लेते है एक प्रण,
लड़ना है सबको मिलकर इस रण।

फैलाएंगे इस धरती पर हरियाली,
ना फैलने देंगे दुबारा कोई भी महामारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलम तलवार की

कलम होती है तलवार से भारी,
सबको है इस बात की जानकारी।

तो रख दो सब ये तलवार,
करो एक दूसरे पर सिर्फ़ कलम से वार।

क्यों ना इस कलम का ही सहारा लिया जाए,
और दुनिया से राग-द्वेष दूर किया जाए।

सोचो कैसी होगी पीर-पराई ?
जिसमें होगी सिर्फ कलम से लड़ाई।

सब एक-दूसरे पर करेंगे शब्दों की मार,
यही होंगे हम सबके बस हथियार।

इसमें लड़ने वाले नहीं कहलाएंगे शैतान,
होंगे यहां सभी कवि-कवयित्री महान।

क्यों न हम ऐसा ज़हान बनाएँ,
जहां सब प्यार से बैठे और मुस्कराएँ।

तोड़ दो हर दिल से नफ़रत की दीवार,
खुशहाल बने, सबका जीवन संसार।

आएगा ना लौट के ये वक्त दुबारा,
जी लो जितना भी हस के, ये वक्त है तुम्हारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रह जाएँगी बस सिर्फ दिल में यादें,
कर ना सकेंगे, हम सब मिलकर यू बातें।

वक्त कह रहा है कर लो गिले-शिकवे दूर,
कहीं हो ना जाएँ, हम सबसे हमेशा के लिए दूर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवारा शब्द

अब तो कलम भी हुई बेहाल,
कहती है क्या लिखूं इस दर्द-ए-दुनिया का हाल।

अब तो शब्द भी फिरते हैं आवारा,
कलम ने भी ना समझा उठना गवारा।

अब तो कलम भी गई है थम,
जब से दुनिया भर की आंखें हो गई है नम।

मैंने कलम से कहा कुछ तो ऐसा लिख,
जिसे पढ़कर सबके दिल जाए खिल।

हे कृष्ण मुरारी! फिर से ला दो वो हंसी पुरानी,
जिसमें साथ बैठते थे दोस्त, कहते थे बचपन की कहानी।

हे भगवान! फिर से ला दो वापस वो खुशहाली,
जिसमें बच्चे करें मस्ती, खेलें सब संग होली दीवाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होशियार समय

आज मुश्किल से कलम उठाई,
जब हो गई दिल पर शब्दों की चढ़ाई।

उन सबको देख-देख दिल बार-बार रोया,
जिन्होंने इस महामारी में अपनो को है खोया।

खो दिये हैं जिन्होंने अपने हमजोली,
नहीं खेल सकेंगे फिर कभी सावन में आँख मिचौली।

हिम्मत ही नहीं कर पा रही उस सखी से करने की मैं बात,
जिसके साथ बचपन में पढ़े-लिखे हम साथ-साथ।

होशियार है बहुत समझ जाएगी मेरा संदेश,
सिर्फ जुटा ही नहीं पाई हिम्मत, दिल में नहीं कोई द्वेष।

भगवान सबको देना जीने की शक्ति अपार,
जिससे बना सके खुशहाल, बच्चों का घर संसार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोखे का धुंआ

जब-जब आई यादों की फुहारें,
तो दिल बार-बार यही पुकारे।

पहुँचा दो भगवान उसी बचपन में,
रहते थे मस्त अपनी ही धुन में।

अब तो लोग ढूँढते ऐसे मौके है,
जीवन में बस धोखे ही धोखे हैं।

तोड़ा गया हर मोड़ पर विश्वास,
फिर भी न छोड़ी उम्मीद की आस।

नहीं खोया वो मेरा स्वाभिमान,
जिसका है मुझे अब भी गुमान।

ईमानदारी रही है हमेशा मेरा गहना,
जिसको है मुझे हमेशा पहने रहना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सखानल

ना कुछ सूझा ना कुछ समझ आया,
बस दोस्तों में ही अपनापन पाया।

रिश्तों में है अनमोल रिश्ता दोस्ती का,
दोस्तों के हैं संग हर पल खुशी का।

दोस्त हैं तो बस जीने की आस है,
वरना तो जिंदगी जैसे शुगर फ्री मिठास है।

जैसे दोस्त मिले जिंदगी में मुझको,
वैसे ही दोस्त देना रब तुम सबको।

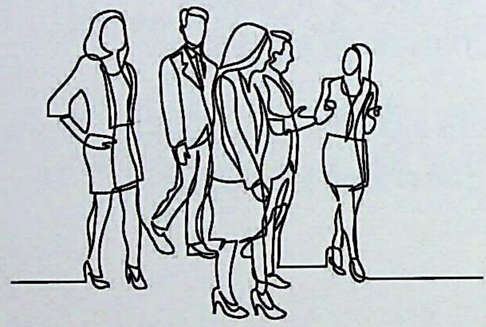

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्मीदों का पतझड़

मेरी उम्मीदें तो पतझड़ सी झड़ी,
कभी गई सूख तो कभी हुई हरी।

बेचैन मन में है बस सिर्फ तनहाईयाँ,
रहती है हर समय दोस्तों की परछाईयाँ।

मेरी चाहतों में ना करना इजाफा,
देना सुकून-ए-बरक्कत व माफ़ीनामा।

जीवन से बस एक ही सबक मिला,
जहां कद्र नही वहाँ कर न गिला।

सपनों को लेकर उड़ती हूँ हवा में
ऐसी महक़ है अब तो फिज़ा में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्धविराम

यहाँ कुछ भी नहीं है अब मेरा,
मुझे जाना है छोड़कर अब ये डेरा।

सच्चाई ने आकर इस कद्र है मुझको घेरा
लग रहा है मिलेगा नया रैन बसेरा।

भूल जाएंगे एक दिन मुझे वो सब,
जो कहते हैं आज तुम हो सब कुछ अब।

कहाँ जाऊँ मन बहलाने को अब,
लगता है जैसे छूट रहा है सब, मेरे रब।

दोस्तों तुमने ही तो दी है जीने की वजह,
पहले तो जिंदगी यूँ ही थी बस बेवजह।

करने हैं मुझे सब काम वो पूरे,
जीवन में जो रह गये हैं अधूरे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिचकी

कैसा है ये वक्त का कहर,
कट ही रहा है हर पल मगर।

कोई बन रहा है जहर,
तो कोई गया है ठहर।

सूना सा लगता है अब ये शहर,
मुश्किल है जीवन का हर पहर।

कोई ले रहा है सिसकी,
तो किसी को आ रही है हिचकी।

पर वक्त की घड़ी नहीं रूकती,
चाहे कभी हसाँती, चाहे कभी रूलाती।

बीत जाना है ये जीवन एक दिन,
रह जाएँगे ये पल होके छिन-बिन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिथ्या

क्या है ये नाम की माया,
जो समझा बस वही समझ पाया।

जिसके घर में ईमानदारी ने डेरा जमाया,
वही जीवन में सफल बन पाया।

मत सोचो कि मैने सिर्फ नाम कमाया,
जो मुझमें आया वो सबमे ना पाया।

जीवन की मुश्किल है नैया,
जो पार कर गया वही है सफल खेवैया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरणागति

सावन की पहली आई है फुहार,
दिल पर हुई नहीं बातों की बौछार।

कर रही हूँ आज भी इंतजार,
कि सावन में आए ऐसी बहार।

भर जाए दिल की सारी दरार,
मन में ना रहे कोई भी टकरार।

आ जाये उनके दिल को भी करार,
कि स्वाभिमानी हूँ, नहीं मानती हूँ मैं हार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु-गोविन्द

जिसके पास है गुरु,
उसमें नहीं होता है गुरुर।

जिसके पास नहीं है गुरु,
वो रहता है मगरूर।

गुरू सिखाता है जीने का हुनर,
गुरु को समझना ज़रूर।

हर वो इंसान है गुरु,
जिससे सीखते हैं हम रू-ब-रू।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोस्ती की हस्ती

वैसे तो दोस्तों को रात दिन ही मन में पाया,
फिर भी दोस्ती को मनाने का दिन है आया।

हर दोस्त अपने आप में अलग ही भाया,
स्वभाव में झलकती सबके धूप-छाँव की छाया।

किसी ने दोस्ती का रिश्ता है निभाया,
तो किसी ने रिश्तों को निभाना है सिखाया।

दोस्तों में तो जैसे गुणों की है खान,
हर दोस्त की अपनी है अलग एक शान।

दोस्तों का होता है अलग ही फलसफ़ा,
दोस्तों की हर बात में है जीने की दवा।

दोस्तों की बातों में घुंघरूओं सी खनक,
दोस्तों के साथ ही है जीने की ललक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुमशुदा बिंदी

झूला झूल रही हैं सखियाँ,
कैसे कहें हम मन की बतियाँ।

सखियाँ जो जागी सारी-सारी रतियाँ,
सोचती नहीं जो अब अपनी खुशियाँ,
खो गई उनके होठों की लाली और माथे की बिंदियाँ,
झूला झूल रही हैं सखियाँ,
कैसे कहें हम मन की बतियाँ।

देखते ये ख्वाब जिनकी अखियाँ,
उन आँखों में नहीं अब निंदियाँ,
खो गयी उनके पैरों की पायल और बिछियाँ,
झूला झूल रही हैं सखियाँ,
कैसे कहें हम मन की बतियाँ।

कैसे करें सावन में बातें उनकी सखियाँ,
कैसे दे हरियाली तीज़ की बधाइयाँ,
खो गये है उनके रंग और खुशियाँ,
झूला झूल रही हैं सखियाँ,
कैसे कहें हम मन की बतियाँ।

कैसे रूके उनकी आँखों से आंसू की झड़ियाँ,
कैसे लें वो बच्चों की बलईयाँ,
खो गयी है उनके तो सावन की गुजियाँ और मिठाइयाँ,
झूला झूल रही हैं सखियाँ,
कैसे कहें हम मन की बतियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jammu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

न्यारी-न्यारी

आदतें हैं तुम सबकी न्यारी-न्यारी,
पर दोस्ती है बहुत प्यारी-प्यारी।

आती है जब वादों को निभाने की बारी,
मुश्किल पड़े चाहे जब कितनी भी भारी।

निभाते हो सब पूरी ईमानदारी,
खुशी में भी देते हो गाली।

सबमें चाहे मीलों की है दूरी,
पर बंधे हो सब विश्वास रूपी डोरी।

स्नेह, प्यार पीते-पीते मैं हो गई वारी-वारी,
बनी रहे दोस्ती जैसे कृष्ण-सुदामा की जोड़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात्विक अहम

जीवन में अब करने पूरे सपने है,
धीरे-धीरे लगने लगे जो अब अपने हैं,
जोड़े थे जो धागे शायद वो थोड़े कच्चे हैं,
पर बात के हम अपनी अब भी पक्के हैं,
वक्त दिया जिनको वो बात की अपनी कच्चे हैं,
अब वक्त नहीं हम पर, हम देशभक्त पक्के हैं।

जीवन में अब करने पूरे सपने है,
धीरे-धीरे लगने लगे जो अब अपने हैं,
देश माँगेगा अगर कभी कुर्बानी,
देनी है हम सबको इसकी जुबानी,
हटना नहीं रहना तब हमको आगे है,
जान भी दें दें हर वादे के सच्चे हैं।

जीवन में अब करने पूरे सपने है,
धीरे-धीरे लगने लगे जो अब अपने हैं,
देखती हूँ सपना देशभक्त कहलाने का,
करके दिखाना है नहीं वक्त बहाने का,
मिलकर हम सब आवाज एक बन जाएँगे,
वक्त आने पर कर्तव्य को अपने निभाएँगे।

जीवन में अब करने पूरे सपने है,
धीरे-धीरे लगने लगे जो अब अपने हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगदान

मन में उठी है एक छोटी सी इच्छा,
जिसको पूरी करने की माँगती हूँ भिक्षा।

चाहती हूँ करना उन लोगों को मैं अंगदान,
आ रही हो जिनके जीवन में, मुश्किलें तमाम।

इतना सा करना मुझ पर एक उपकार,
आ जाए, जिनके अंग में कोई विकार।

देना है अंग मेरे, जिनको हो जरूरत अपार,
चाहती हूँ किसी के जीवन में आये खुशी अपार।

नहीं चाहती बनकर रह जाना मैं राख,
चाहती हूँ मरकर भी जीना मरने के बाद।

हो सकता है किसी का जीवन आबाद,
मत करना मेरे अंगों को मेरे बाद बर्बाद।

यही देना चाहती हूं समाज को मैं संदेश,
जीते जी कर लो अंगदान जैसा काम विशेष।

अभी तो जी रहे हैं साँसों के साथ,
फिर जिएंगे, साँसों के निकल जाने के बाद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तलाश अपनी

उस वक्त की कोरी कल्पना है सारी,
शायद जब पड़ेगी नारी नर पर भारी।

फिर भी कोशिश रहेगी निरन्तर जारी,
होगी एक दिन पूरी तमन्ना हमारी।

बहुत रही बनकर तुम सहनशील,
अब नहीं होना, तुम्हें किसी से जलील।

चरित्र ही होता है नारी का गहना,
कोई उस पर उंगली उठाये तो चुप नहीं रहना।

अब नहीं रहना बनके तुमको अबला,
कर न सके कोई तुम पर हमला।

हर नारी का जख्म है बहुत गहरा,
लगा है उस पर संस्कारों का पहरा।

होने नहीं दोगी अपने साथ कुछ अन्याय,
दिलाना होगा सबको अब तुमको न्याय।

दूसरों की गलती पर खुद नहीं झुकना औरो को झुकाना है,
बनके झांसी की रानी तुमको सबक सिखाना है।

उठो नारियों अब तुमको कुछ करके दिखाना है,
सीखा जो मानवता का पाठ अब वो आगे पढ़ाना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोस्त और दास्तां

दोस्त ही तो है सब ताकत मेरी,
दोस्तों के बिना जिन्दगी है अधूरी।

दोस्त ही कहते हैं, बस मत कर ज्यादा काम,
कभी तो कर ले, तू थोड़ा सा आराम।

सच्चाई के गहने से रहती है हरदम सजी-सजी,
क्यूं रखती है खुद को इतना बिजी-बिजी।

अस्त-व्यस्त जीवन को रखना है बस व्यस्त,
दोस्तों में भूल गम सारे, रहते हैं हम मस्त।

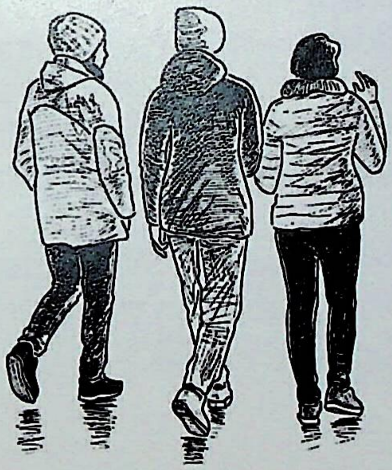

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुल्हन

आज दुल्हनें तरह-तरह के फूलों से हैं लदी,
रह जाएगी बन के पुराने अखबार सी रद्दी।

जिन दुल्हनों को दिया जा रहा है इतना सम्मान,
बनकर रह जाना है उनको घर का खूबसूरत सा सामान।

जिस दुल्हन को लाते हैं इतने गाजे-बाजे से,
अफसोस कि रख नहीं पाते, उसको उतने नाजों से।

यही होनी है ज्यादातर दुल्हनों की दुर्दशा,
चाहे कितना भी लें दुल्हने खुद को गहनों से सजा।

ला रहे हैं आज जिसको इतना सजाकर,
कल को उसी के सजने पर रखेंगे दिल दुखाकर।

गूँज़ रही है जितनी शादियों में आतिशबाजी,
उनमें से कुछ दुल्हनें फुलझड़ी की तरह जल जाती।

जितनी दुल्हनें अपनी शादी की रस्मों में खिलखिलाती,
उतनी ही दुल्हनें बाद में जीवन में चुप कर दी जाती।

जितने सपने सजाकर वो अपना घर छोड़कर आती,
हार जाती है उनमें से कुछ दुल्हनें सफल विवाह की बाजी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुसाफिर

आये हैं सब अकेले इस जहाँ में,
अकेले ही जाना है इस जहाँ से।

फिर क्यूँ खुद को रिश्तों में भटकाना,
रिश्ते तो जीवन को काटने का है एक बहाना।

रिश्तों का फैला है ऐसा नुकीला जाल,
जो इसमें फँसा, जीवन हुआ उसका जार-जार।

दुख-दर्द है जीवन में सब मोह के सारे,
गर छोड़ दो मोह, भागे सारे दर्द हमारे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यादों की गठरी

जब होती हूँ एकदम खाली,
टटोलती हूँ मन की पोटली सारी।

यादें हैं कुछ दोस्तों की इसमें प्यारी,
बाकी तो धोखों से भरी है दुनिया हमारी।

कुछ दूर होकर भी होते हैं साथ मेरे,
कुछ साथ होकर भी करते हैं छल बहुतेरे।

जितनी ढूँढी जीवन जीने में सरलता,
पर ख़ुशी नहीं मिलती इतनी सहजता।

दिखावे का सिर्फ ये संसार है सारा,
सब कुछ ऐसे लगता है जैसे रंगीन सितारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैट्रो

अब तो मैट्रो का है जमाना,
मैट्रो करे सबका सफर सुहाना।

युवा पीढ़ी को समय का पाबंद बनाना,
कर न सके कोई लेट होने का बहाना।

होता है सरल मैट्रो का सफर,
कर देता है आसान, हर मुसाफ़िर की डगर।

जब भी आता है मैट्रो के सफर का जिक्र,
पैसे की बचत और लेट न होने की फिक्र।

देखा है हमने मैट्रो में भविष्य को बनते,
पढ़ते हैं युवा मैट्रो में चलते-चलते।

होती है कम दुघर्टना की संभावना,
बढ़ रही है सभी लोगों में सद्भावना।

महिलाओं और वृद्ध को देख यूं अदब से खड़े हो जाना,
लगता है अच्छा! नियमों का संस्कारों में परिवर्तित हो जाना।

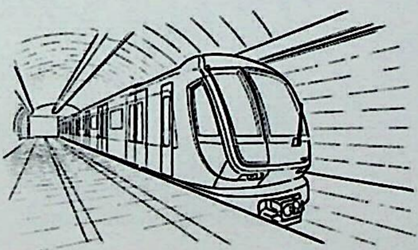

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

याराना

दोस्ती में एक-एक मनका ऐसा जोड़ा,
जिस चाहकर भी न जाए अब कभी छोड़ा।

देते रहो यूँ ही एक दूसरे को दोस्ती का तोहफा,
सबको नहीं मिलता जीवन में दुबारा ऐसा मौका।

यूँ ही लड़ते झगड़ते रहो, पर करते रहो बातें,
एक दिन रह जाएँगे, बनकर हम सब यादें।

मिले हैं सब दोस्त दो दशक के बाद,
यूँ ही रहना मिलकर सब साथ-साथ।

दोस्ती बनी रहे सबकी यूँ ही सालों-साल,
देते रहें लोग हमारी दोस्ती की यूँ मिसाल।

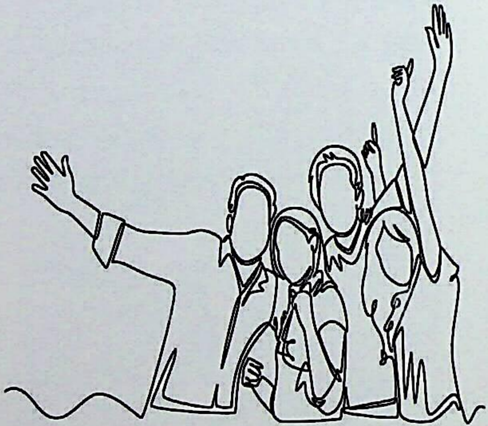

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममता

माँ होती है एक पालनहार,
माँ से ही है सारा घर संसार।

जिसने पहना माँ की शिक्षा का हार,
तर गया वो जीवन की हर मुश्किल में बारम्बार।

माँ नहीं चाहे कभी कोई उपहार
हर बच्चा दे माँ को सम्मान अपार।

माँ करती जब-जब कठोर शब्दों की बौछार,
खुलता उसी से बच्चों की तरक्की का द्वार।

माँ में ही होती सृजनात्मकता की शक्ति अपार,
जिसके आगे नतमस्तक सारा संसार।

माँ शब्द का अर्थ है बड़ा ही विस्तार,
बनकर माँ समझा जीवन का सार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारी

वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब महिला थकी हो और घरवाले कहें ,
आराम कर ले अब बस,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब घर के मुद्दों में माँगेगे महिलाओं की भी राय,
जिस सुबह महिलाओं को भी बनी हुई चाय पीने को मिले।

वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जिस दिन महिलाओं को भी मिलेगा मर्द के जैसा दर्जा ,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब घरवाले कहें, तुम तो रोज काम करती हो आज काम करेंगे हम ,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब घरवाले कहें तुम तो रोज काम करती हो आज काम करेंगे हम।

वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब घर वाले पूछेंगे, कहाँ दर्द है ये तो बताओ,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब घरवाले कहना बंद करेंगे, तुम करती ही क्या हो सारा दिन,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस।

जब महिलाओं से झूठ नहीं बोला जाएगा सब सच,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
जब महिलाओं के कहने पर मर्द करेंगे बुरी आदतों का हनन,
वही दिन कहलायेगा महिला दिवस,
अगर ये सब दिख रहा है तो सही अर्थ में है महिला दिवस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होली

आओ सब मिलकर खेलें होली,
भर दे खुशियों से जीवन की रंगोली।

लाल, पीले, हरे, गुलाबी पहने हैं सब रंग,
रंग भी खिलते हैं सब सखियों के संग।

होली पर आई भगवा रंग की है बहार,
सब पर बरसे प्यार के रंगों की बौछार।

इस होली लगा दो हर उस को गुलाल,
जिसके प्रति कभी मन में था कोई मलाल।

कर देंगे इस होली में बुरी आदतों का दहन,
रहेंगे सब मिलजुल कर होके प्यार में मग्न।

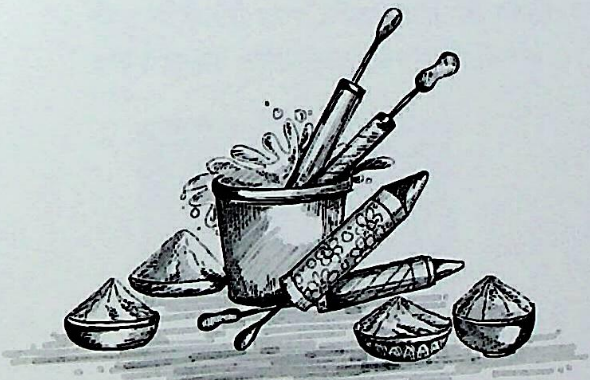

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइना

खुद की खुद से मिलने की कर ली है तैयारी,
छोड़ के सारे काम बैठी हूँ खाली-खाली।

जिसने किया हमेशा मेहनत का नशा,
उस पर न कोई दूजा नशा चढ़ा।

सब रंग पड़ जाते हैं एकदम फीके,
जब मेहनत से कोई खुद को है सीचे।

देशभक्ति की मन में धधकती है ज्वाला,
जिसमें अपना सम्पूर्ण मन न्यौछावर कर डाला।

हमेशा पिरोती हूँ सबके लिए शब्दों की माला,
आज खुद से मिलने का भी अनुभव लिख डाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरितार्थ

भावों में है तुम्हारे त्याग और समर्पण,
कर देती हो अपना सर्वस्व तुम अर्पण।

दोस्त वही जो निकाले दोस्त की गलतियाँ,
वो नहीं जो गलतियों में धकेलने की गढ़े युक्तियाँ।

तुमसे मिलकर ही जाना है जीवन का अर्थ,
तुमसे पहले तो जा रहा था जीवन यूँ ही व्यर्थ।

यूँ ही रहना हमेशा मेरे साथ तुम खड़ी,
चाहे आ जाए कितनी भी मुश्किल घड़ी।

है तुममे सबसे अलग ही कुछ बात,
छलक जाते हैं तुमसे मिलकर मेरे जज्बात।

दोस्त रहोगी मेरी खास, हमेशा रहोगी मेरी सहेली,
बातें हैं तुम्हारी आध्यात्मिक और सबसे निराली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मातृभाषा

खो गयी है अब माथे की बिंदी,
आती नहीं कुछ की जुबां पे हिंदी।

माँ हो गयी अंग्रेजी में अब मौम,
संस्कारों का नहीं रहा अब कहीं खौफ।

अंग्रेजी में लिये जाने लगे हैं संस्कार,
हिंदी बोलने वाले कहलाने लगे हैं गंवार।

खुद हमने विदेशी भाषा को अपनाया,
और अपनी मातृभाषा को दूर भगाया।

करना है अब हिन्दी भाषा का सम्मान,
आने नहीं देंगे हिंदी भाषा पर हम आन।

सब मिलकर बोलो दिल से हिंदी भाषा,
करते हैं सबसे यही हम अब आशा।

जरूरत से ज्यादा अंग्रेजी का करो बहिष्कार,
अपने देश में लाओ अपने ही संस्कार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

श्रीकृष्ण शरण

जब पड़े किसी पर विपदा भारी,
हर लो आके मेरे कृष्ण मुरारी।

सच खड़ा हमेशा से कठघरों में,
झूठ नाच रहा मीठे बोलो में।

इस कलयुग में भरा है पाखण्ड,
जलती नहीं सच की ज्योति कहीं अखण्ड।

मेरे भी उसूल है, कुछ खरे और बड़े,
जहाँ नहीं सच, वहाँ होते नहीं हम खड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

दशहरा

जैसा कि नाम से ही होता है प्रतीत दशहरा,
इस दिन सबके अवगुणों को है हरा।

इससे पहले कि हो जाए ये शरीर राख,
कर लो अपने अंदर के रावण को खाक।

होती आई है हमेशा असत्य पर सत्य की जीत,
अच्छाई करके हनन बुराई का कर देती है सब ठीक।

चाहे हो जाए समाज में रावण जैसे व्यक्तित्व हजार,
हर युग में आयेंगे, राम करने उनका संहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

व्रत संस्कार

आज फिर दिन है देखो लाल सुहाग के व्रत का बहना,
संस्कार है या अंधविश्वास कोई जरा सोच के कहना।

जिनके सुहाग उजड़ गये कोविड में,
उन्होंने भी तो रखें होंगे व्रत संस्कारों को लेकर मन में।

टूट गया साथ और विश्वास दोनों एक पल में,
मत करो ऐसा अंधविश्वास, मत रहो डर में।

धर्म निभाना मतलब होता नहीं है भूखा रहना,
ये मेरे विचार है सिर्फ इसे अन्यथा न लेना।

कहते हैं व्रत करने से पति की बढ़ती है उम्र,
शराब, सिगरेट, गुटखे का फिर क्यों है मन में भ्रम।

विनम्र प्रार्थना, मत करो ऐसे समाज का निर्माण,
होता रहे जिसमें औरतों की भावनाओं से खिलवाड़।

तोड़नी है अंधविश्वासों की ये बेड़ियां सारी,
नहीं करनी ऐसी रस्मों की अब चौकीदारी।

मैं हूँ वो नारी जिसे न बांध पाई अंधविश्वासी ये दुनिया सारी,
करती है जो विश्वास कर्मों की लिखावट पर सारी।

एक दिन व्रत रखकर ही नहीं दिया जाता पति को मान,
पूरे जीवन एक दूसरे को देना होगा विश्वास, प्यार, सम्मान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंधकार से उजाले की ओर

हर तरफ चमक रहे हैं दीप,
मिल रहे हैं सब मन के मीत।

रंग-बिरंगी सजी है रंगोलियाँ,
खुशियों से भरी रहे सबकी झोलियाँ।

गलत आचरण का मन में फोड़ो बम,
अच्छाई को अपनाओ मन में हरदम।

दियो का इतना करो उजाला,
रोशन हो जाए, हर मन अंधकार वाला।

दीपावली पर ऐसे दो उपहार,
पहन के मन में सच्चाई का हार।

फीकी लगने लगे मिठाई,
शक्कर सी धुली हो जीवन में सच्चाई।

आओ इस दीवाली जलाएँ अंधविश्वासों की फुलझड़ियाँ,
पूजी जाने लगे घर की ही लक्ष्मियाँ।

हर घर में हो इतनी जगमग,
हीरे सा चमके, सबका सच्चा मन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2

नवयुग के स्तम्भ

क्या यही बनेंगे इस नवयुग का आधार?
सोचकर दिल दहल रहा है बार-बार।

हाथों में बढ़ रही है सिगरेट ज्यादा,
शरीर पर हो रहे हैं वस्त्र कम,
जुबां पर आई है अभद्र शब्दों की बाढ़,
क्या यही करेंगे नव भारत का निर्माण?
क्या यही बनेंगे इस नवयुग का आधार?
सोचकर दिल दहल रहा है बार-बार,

बना रहे है जो सिर्फ धुएँ में छल्ले,
करते हैं जो देर रात तक हल्ले ही हल्ले,
करके दूषित हवा को रहते हैं जो मदहोश,
दे रहे हैं वहीं आतिशबाजी और पराली को दोष,
क्या यही बनेंगे इस नवयुग का आधार?
सोचकर दिल दहल रहा है बार-बार।

आँखे देखकर हो रही है शर्मासार,
क्या ये है हमारे नवयुग का आधार?
रूदन से भर रहा गला निकलते है न शब्द,
देखकर इस नवयुग के आधार को हो रही मैं स्तब्ध,
क्या यही बनेंगे इस नवयुग का आधार?
सोचकर दिल दहल रहा है बार-बार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुशी की मुस्कान

तपती गर्मी में हल्की-हल्की बारिश की फुहारों में है खुशी,
कड़कती सर्दी में चाय की एक चुश्की में है खुशी।

किसी के चेहरे पर हमारी वजह से आई मुस्कान में है खुशी,
दोस्तों के साथ टपरी पर हसी के ठहाकों में है खुशी।

ट्रेन, बस में अपनी सीट दूसरों के लिए छोड़ खड़े होने में है खुशी,
सपने में डरकर अचानक नींद खुलने के अहसास में है खुशी।

रूठने-मनाने के अहसास में मिलती है खुशी,
अपनो को प्यार बांटने में मिलती है खुशी।

छोटी-छोटी बातों में बहुत ही सहज मिल जाती है खुशी,
हर इंसान के व्यक्तिगत विचारों की विभिन्न है खुशी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दस्तक

अब तो पड़ी है सूनी वो दरवाजे की सीढ़ियाँ,
जिन पर बैठते थे हम और वो जिनकी है हम पीढ़ियाँ।

कहाँ गई वो बचपन की शांत सी रातें,
बिजली आने के इंतजार में करते थे देर रात तक घंटों बातें।

वो खेल-खेल में छत से छत भागना-कूदना,
वो एक साथ सबका मिलकर गेंद-गिट्टू खेलना।

वो हर वक्त एक दूसरे की कुंडी खटखटाना,
टी.वी. में कम पड़ोसियों की लड़ाई में ज्यादा आनन्द आना।

कैसे करते थे खेल-खेल में सब मिलकर किट्टी,
होती थी हर समय बाते खट्टी और मिठ्ठी।

वो भी क्या वक्त था कैसा था वो जमाना,
बरसों बीत गए रह गया अब सिर्फ उन यादों का याद आना।

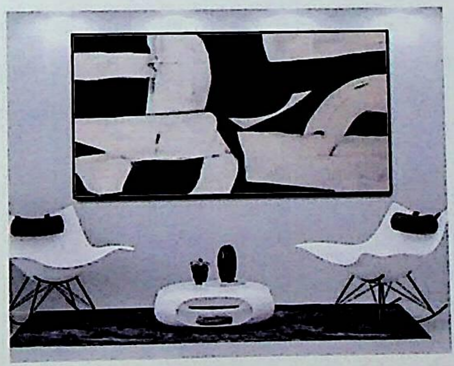

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्त के साथ

उस समय ये पन्ने ही है जो साथ निभाते।

जब मन के भाव हम कह नहीं पाते,
दिल में राज सब रख नहीं पाते,
खुद को हरदम बस अकेला है पाते,
उस समय ये पन्ने ही है जो साथ निभाते।

कुछ लोग जीवन में बस ऐसे मिल जाते,
जो न तो रोने देते और नही हँसा पाते,
वक्त की टहनी पर खिलखिलाने की सलाह दे जाते,
उस समय ये पन्ने ही है जो साथ निभाते।

कुछ लोग हाथ पकड़ते भी नहीं ओर साथ छुड़ा नहीं पाते
न भूलने देते हैं और न ही खुद भुला पाते
बस गम देकर मुस्कराने के तरीके हैं बताते
उस समय ये पन्ने ही है जो साथ निभाते

कुछ लोग जीवन में मिलकर भीनी सी खुशबू है दे जाते,
सच्चा दर्द देकर बस झूठा प्यार है जताते,
जीवन भर के लिए बस मीठी यादें दे जाते,
उस समय ये पन्ने ही है जो साथ निभाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदलता दौर

आये न जीवन में ऐसी फिर जून-जुलाई।

मन लगा था जिसमें थोड़ा सा चहकने,
बिन पंख उड़ जाऊँ लगता था जैसे गगन में,
दे गई, दर्द हो गई खुशियों से जुदाई,
आये न जीवन में ऐसी फिर जून-जुलाई।

जितनी खिलखिलाई, उतनी ही खेल ली दर्द ने छुपन-छुपाई,
दबे हुए विचारों की पहले तो हुई खुब खुदाई,
डालकर फिर उस पर मिट्टी रिश्तों की नई पौध लगाई,
आये न जीवन में ऐसी फिर जून-जुलाई।

जिसमें न दिन का पता चला न रातों की लम्बाई,
खुशियों ने कर ली थी जैसे जीवन भर की भरपाई,
दर्द मिले हैं इतने गहरे, छोटा लगने लगा शब्द रूसवाई,
आये न जीवन में ऐसी फिर जून-जुलाई।

ऐसा शब्दों ने जकड़ा, कान्हा के चरणों में दौड़ी चली आई,
दर्दों पर मरहम बस कुछ दिन का ही लगवा पाई,
लगने लगे थे जो अपने दे गए वो भी पीर पराई
आये न जीवन में ऐसी फिर जून-जुलाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलम का प्रहार

पूछा किसी ने इतने दिन से कहाँ थे ये विचार,
हुआ नहीं कुछ दिन से क्यूँ कलम पर यूँ प्रहार।

मन के भाव हो रहे थे बस कहीं सीधे बाहर,
पन्नों तक तो आ ही नहीं रही थी ये बहार।

मन पर लग गई रोक, छुप गए सारे जज्बात,
अब तो बस ये शब्द ही आते हैं सारी-सारी रात।

जो शब्द निकल नहीं पाते बहुत हलचल है मचाते,
अहसासों के मंजर शायद फिर थम नहीं पाते।

बहुत आसान है ये कहना कि सब कुछ भूल जाते,
उस समय ये पन्ने ही हैं बस और बस जो यादे आते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

वक्त का इम्तिहान

जीवन में आ जाते हैं बस कुछ ऐसे इम्तिहान,
नहीं होना हमे उस समय बिल्कुल भी हैरान।

दिया जिनको जीवन में सबसे ज्यादा मान,
बन गए हैं आज वो भी एकदम से अंजान।

रख दी जिनके पास सारी यादें अमानत के समान,
उन्होंने भी ऐसा महसूस कराया जैसे नहीं कोई जान-पहचान।

त्याग ही है बस स्वाति के जीवन का दूसरा नाम,
समझ न पाए वो भी जिनको दिया अपना वक्त तमाम।

रहेंगे कुछ लोग हमेशा दिल में चमकते हुए सितारे के समान,
बस संजो के रख पाऊं उनकी यादों को यही है अब अरमान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सफर

है बहुत मुश्किल जीवन का ये सफर,
याद आते हैं कुछ लोग हर घड़ी हर पहर।

मिल गए हैं जीवन में सारे ही अनुभव,
बिन मांगे दे रहा है सबकुछ अब ये रब।

मन हो रहा था मेरा मुझ पर ही हावी,
सुनता नहीं था मेरी बिल्कुल भी जरा भी।

भरनी है जीवन में अब एक नई उड़ान,
रोक न पाए जिसे अब कोई भी तूफान।

अब खुद को ही हराकर खुद से है जीतना,
मुश्किल से हिम्मत है जुटाई, हे रब! अब मत पीछे खींचना।

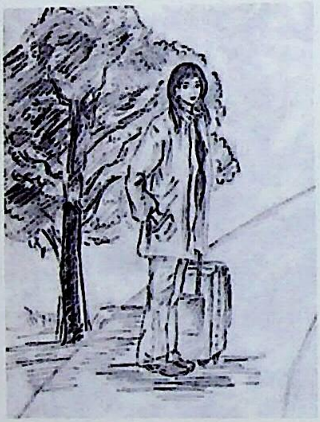

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीते हुए पल

मन में नहीं रही कोई भी अब हलचल,
याद आते हैं बस बीते हुए हर वो पल।

सब दर्द भर जाएँगे एक दिन वक्त के साथ,
बस टीस सी होगी जब याद आएगी हर वो बात।

रहती है ये आँखें हर पल बस यूं ही नम,
शायद ये दर्द जीवन में कभी होगा ही नहीं कम।

इतने गहरे बस गए दिल में ये अहसास,
भूल पाउँगी इन अहसासों को इसकी नहीं कोई आस।

जिसने नहीं जोड़ने दिए कभी अपने आगे हाथ,
आज वो भी है स्वीकार उनको, ऐसे बदल गये जज्बात।

मन हो गया है आज बस इतना आबाद,
बात-बात पर बोलने लगा उनको ही धन्यवाद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिश्तों की डोर

कुछ रिश्तों की डोर न ही बंधी है रस्मों से,
न ही जुड़े हैं वो रिश्ते एक-दूसरे के जिस्मों से।

फिर भी रहते हैं बंधे हमेशा उन वादों से,
करते हैं जो वादा, मिलने का वो ख्वाबों में।

करते हैं बातें वो छुप-छुप कर आंखों-आंखों में,
होती है बातें जहां जुड़कर दिल के तारों में।

जागते हैं जो अपने-अपने घरोंदों में रातों में,
अफसोस कि मिल ही पाते बस उन बातों में।

कभी-कभी लगता है मिलने का है सफर मिलों में,
मिलने पर जाए बीत वहीं वक्त, डूब के आंखों की झीलों में।

बीत रहा है जो वक्त इन खूबसूरत पलों में,
रखना है सहेजकर बस हमेशा एक-दूसरे के दिलों में।

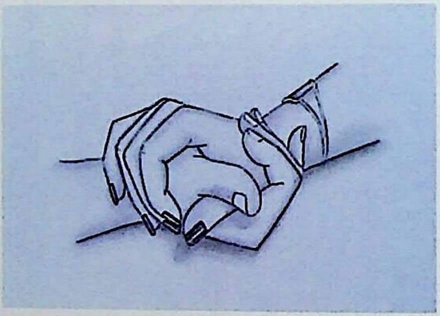

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

धुंध

धुंध में है ढका आज सारा शहर,
दिलों पर चढ़ी धुंध का क्या करें मगर?

ढूंढती है बस सच को दिलों में आतुर नजर,
झूठ के सायों ने घेरा है लोगों को इस कदर,
विश्वास बिना सबका जीवन है एक कड़वा जहर,
धुंध में है ढका आज सारा शहर,
दिलों पर चढ़ी धुंध का क्या करें मगर?

उमड़ा है मनों में बस ख्वाबों को पूरा करने का मंजर,
पिरो नहीं रहे सच्चाई के मोती गए हैं जो कहीं बिखर,
अफसोस कि दे रही दिलों की धुंध, दिल की बिमारी मगर,
धुंध में है ढका आज सारा शहर,
दिलों पर चढ़ी धुंध का क्या करें मगर?

शहर की धुंध तो हट जाएगी किसी दिन किसी पहर,
क्या धोखों की धुंध छटकर करेगी उजाला ईमानदारी का फिर,
क्या ये धुंध छटकर लाएगी दिलों में फिर प्यार ही प्यार,
धुंध में है ढका आज सारा शहर,
दिलों पर चढ़ी धुंध का क्या करें मगर?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनजान डगर

अनजानी सी है डगर अनजाना सा है ये सफर।

क्यूं रहती हूँ आजकल मैं कुछ बेखबर,
आंखों में ही बीत रहा है जैसे हर पहर,
बेगाना सा लगता है अब अपना ही शहर,
अनजानी सी है डगर अनजाना सा है ये सफर।

हर पल में ही जैसे मन चाहे वक्त का इंतजार,
कभी लगे मानो वक्त जाए यही ठहर,
कभी लगे मिनटों में ही जाए बीत जीवन का सफर,
अनजानी सी है डगर अनजाना सा है ये सफर।

हर हंसी के चिलमन से झांकती ये मायूस नजर,
खामोशी के पीछे है छिपा बातों का समंदर,
अनजान सा ये मन बस फिरता इधर उधर,
अनजानी सी है डगर अनजाना सा है ये सफर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सखी की पुकार

एक सखी ने दिया कल रास्ते में पुकार,
लिखो कुछ, बहुत दिन से कर रही हूं इंतजार।

मैंने भी लगा दी फिर आगे कुछ यूँ गुहार,
कुछ तो करो भगवान मन पर शब्दों की बौछार।

आ ही नहीं रहे हैं शब्द ऐसा हुआ है मन पर वार,
जाने क्यूँ लग जाते हैं, इन शब्दों पर ताले बार-बार।

बहती रहे ये धारा शब्दों की बिना किसी पतवार,
अब थामा है हाथ तो छोड़ना न भगवान यूँ बीच मझधार।

पढ़कर मेरे शब्दों को मत करना तुम इन्कार,
छू गई है बात दिल को करते हैं हम इकरार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सपनों की आहट

एक सपने की सपने में हुई है खटखटाखट,
करने चली हूं पूरा उसको अब बिना हिचकिचाहट।

होती है जब अरमानों के पूरा होने की आहट,
छा जाती है लबों पर अनजानी सी मुस्कुराहट।

कभी-कभी लगता है डर, होती है घबराहट,
क्या होंगे भी पूरे सपने, होती है मन में कुलबुलाहट।

वक्त हो चाहे कम नहीं करनी कोई हड़बड़ाहट,
पहुंच ही जाना है मंजिल पर बिना किसी रूकावट।

जीवन का छोटा है सफर मत रखो कड़वाहट,
ऐसे जियो कि मन में रहे हमेशा खिलखिलाहट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्त का पहिया

पहले भी तो चलती थी समय से ये घड़ियाँ,
अब तो लगे कि जैसे पल में बीत रही है सदियाँ।

कभी तो लंबी लगने लगती है ये रतिया,
कभी बीत जाए ये रतिया करते-करते खुद से बतिया।

कभी तो लग जाती है मानों बातों की झड़ियाँ,
कभी लगे बिन बातों के जैसे जीवन में नहीं है खुशियाँ।

कभी खुशी से खिल जाती है मन में कलिया,
कभी लगे कि जैसे उदास मन में जल रही हो फुलझड़ियाँ।

कभी लगे कि मानो विचारों पर लग गई है हथकड़ियाँ,
कभी लगे कि जैसे पल में घूम लूं मैं दुनियाँ।

इसी लगने लगाने में ही बीत रही है जीवन की सब घड़ियाँ,
कुछ तो है इन बातों के और बस मेरे दरमियाँ।

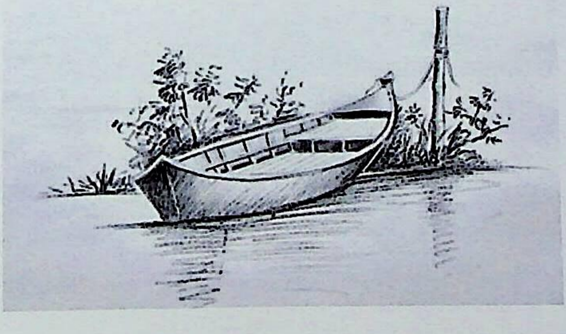

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बसंत

हर साल की तरह फिर आया बसंत,
फूलों पर बहार, रहती जो कि अनंत।

मां सरस्वती ने छेड़ा इस दिन वसंत राग,
दे दिया सारे संसार को ज्ञान ही ज्ञान।

सब ऋतुओं में बसंत ऋतु है राजा,
करना चाहते हैं सब इसमें प्यार सांझा।

सरस्वती मां को करते हैं अर्पित गुलाल,
इस दिन पीला रंग भी करता हैं खूब कमाल।

बसंत पंचमी के आने की होती है जब आहट,
आ जाती है मौसम में भी कुछ गरमाहट।

इस दिन मां सरस्वती की होती है पूजा,
ज्ञान पंचमी भी इस दिन का नाम है दूजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतित

इस साल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया,
अपने और बेगानों का मतलब समझाया।

नए साल पर मिलकर पूरे साल मिलने का टूटा भ्रम,
मिलना दो दूर की बात, बातें भी हो गई कम,
इन दकियानूसी विचारों से खुद को बाहर पाया,
हमने भी अपना दिल फिर खुद बलाया,
इस साल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया,
अपने और बेगानों का मतलब समझाया।

जिनको भी दिल से है अपनाया,
पीठ में खंजर भी सिर्फ उन्होंने ही घुसाया,
इस साल ने राजनीति का मतलब समझाया,
बस इस साल में लोगों पर मक्खन लगाना ही नहीं आया,
इस साल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया,
अपने और बेगानों का मतलब समझाया।

इस साल ने गिरकर खुद उठना सिखाया,
सपनों को साकार करने का सपना दिखाया,
इस नादान को लोगों ने ज्ञान का पाठ पढ़ाया,
इस अज्ञान को थोड़ा ही सही पर समझदार बनाया,
इस साल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया,
अपने और बेगानों का मतलब समझाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंत में बस यही समझ आया,
कोई नहीं होता अपना तो फिर क्यूं किसी का साथ चाहा,
जितना इस साल में खुद को अकेला पाया,
उतना ही दृढ़ता से खुद जीवन जीना आया,
इस साल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया,
अपने और बेगानों का मतलब समझाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant 3

बलिदान

हो गये जो देश के लिए आज कुर्बान,
वो थे हमारे देश के चालीस जवान।

हो के घूम रहे हैं कुछ लोग तो आज लाल,
उन मां से पूछो जिन्होंने खो दिए आज अपने लाल।

एक दिन तो याद करो उन शहीदों को,
जो न भर पाएँगे अपनी माँ की गोदों को।

आज तो याद करो उन बच्चों की पुकार,
जो तकते थे पिता को अपने घर के द्वार।

सूनी पड़ गई जिनके पायल के झनकार,
हो गए जिनके दिल आज के दिन तार-तार।

पड़ गए हैं लाल, पीले रंग फीके-फीके से उनके,
'सुहाग' आ गए लिपट के तिरंगे में जिनके।

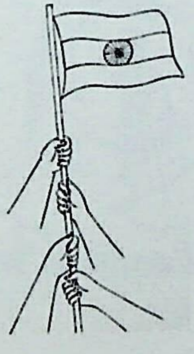

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पराजित विश्वास

विश्वास शब्द से भी ऐसा विश्वास है उठा,
खुद का मन भी लगता खुद से रूठा-रूठा।

नहीं मिलती यहां मांगने से भी प्यार की भीख,
ये दुनियां है सेंमल के फूल की तरह अर्थहीन।

सब कुछ लगता है यहां बस रंगीन,
हर इंसान अंदर से है बड़ा ही संगीन।

बिना ढूंढे मिलते हैं यहां दुश्मन हजार,
ढूंढने से भी नहीं मिलता यहां सच्चा प्यार।

ऐसा ही गजब का है ये दुनिया का रंगमंच,
उम्दा अदाकारी को भी मिलते हैं नंबर चंद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तितिक्षा

शायद ये अहसास अब सिमट जाए,
यूं ही शब्दों में हम बस लिपट जाएँ।

राह देखते थे जिनकी हम देर तलक,
अब तो बीतती है रैना यूँ ही बिना झपके पलक।

आएगा संदेश रहता है बस इंतजार,
आंसुओं की धारा बह उठती है बार-बार।

किस्मत ने दी हर मोड़ पर है ठोकर,
लोगों की नजर में बन गई आज एक जोकर।

भाव है पहुँचेंगे वहां पहुँचना हैं जहाँ,
हम तन्हा थे, तन्हा है और रहेंगे तन्हाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिता का दुलार

घर में आया एक नटखट राजकुमार,
जिसने बनाकर पापा खुशी दी बेशुमार।

जो होता है माँ का जाया,
वो तो है एकदम पापा का साया।

जिसको इतनी मन्नत से है पाया,
पापा ने उस पर सारा प्यार लुटाया।

करता है कोई भी जिद जब-जब,
लाकर देते हैं वो चीज उसको तब-तब।

हमेशा उसके सारे नखरे उठाते,
पापा कम दोस्त जैसे रिश्ते ज्यादा निभाते।

माँ ने उसको डांटा जब-जब,
पापा ने गलती पर भी पुचकारा तब-तब।

यूं ही बनकर दोस्त हमेशा लाड़ जताना,
जीवन के सफर में सही राह दिखाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उलझन

किस्सा था वो आधा-आधा सा,
टूटा उसमें एक पक्का वादा सा।

समझ पाई न मैं उनकी वो उलझनें,
सुलझाने में जिन्हें यूं ही शाम ढले।

दर्द भरी रात ढ़ली और फिर सूरज उगा,
दर्द था पर दिल में कहीं दबा-दबा।

लगी करने दूर फिर उनमें वो दूरियाँ,
हो न खफा जिससे कभी मेरे सखा-सखियाँ।

दोस्ती है उनकी इतनी गहरी,
बातों-बातों में कह जाते हैं दिल की बातें सारी।

दर्द में हो रही थी दोनों की आँखे नम,
हो न कभी ऐसी दोस्ती गलतफहमी में कम।

आखिर में करके शिकवे सारे, दूर हुई तकरार,
ये दोस्ती बनी रहें सालो-साल यूँ ही बरकरार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीनी कम

तुम मुझेंगे ढूँढोंगे पर मैं न मिल पाऊँगी,
सब कुछ सह लेती पर रूसवाई न सह पाऊँगी।

सालों का विश्वास पल में गया है ढ़ह,
हम देखते ही रह गए वो सब कुछ गये हैं कह।

क्यों हो गई खड़ी ये गलतफहमी की दीवार,
तरस जाएंगे अब करने को एक दूजे का दीदार।

अब बस ऐसे ही है जीवन बिताना,
अब न किसी को अपने दिल का हाल बताना।

वो कहते हैं कि मैंने दिल में भी दिमाग लगाया,
पर यहां तो न दिमाग न ही दिल काम आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जिन्दगी का सफर

वक्त का पहिया घूम रहा तेजी से इधर-उधर,
धीरे-धीरे हो रही थी मैं भी जीवन से बेफिक्र।

तब कौन सा पल हो आखिरी आखिर,
किसी को नहीं है इसकी जरा भी खबर।

राह है सच की मुश्किल और कठिन है डगर,
कर देती है अकेला पर झुकने नहीं देती है सर।

कितना भी कठिन हो जीवन का सफर,
आनंदमय है बनाना हर पल को मगर।

जैसे चलते-चलते कलम जाती है रूक,
वैसे ही हो जीवन के अंतिम पल का रूख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इजहार

खुद के साथ बैठने की,की है आज चाह,
खुद ही खुद को दिखा रही जीने की राह।

खुशियों का इजहार कहीं हम कर न सके,
डर है कि कहीं अब किसी की नजर न लगे।

अहसास ऐसे हैं कि बस उड़ जाऊँ गगन में,
जज्बात हैं कि,रखने है छुपाकर अभी मन में।

खुशियों ने दी है अभी तो हल्की सी दस्तक,
कह न सकूँ,बस पन्नों से ही सांझा कर पाऊँ कुछ मुक्तक।

'जीवन धारा' ने ही दे दी जीवन में खुशी बड़ी,
मन ही मन मुस्काऊ,पर कह न पाऊँ अभी कहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-3

सदैव साथ

दोस्ती में तेज है मुकद्दर मेरा,
हर दोस्त में है हुनर का डेरा।

मुश्किलों का रखते हैं सब समाधान,
आ जाए जीवन में जब कोई भी व्यवधान।

उस समय सब मेरे साथ हैं खड़े,
जब भी मुझे उनकी जरूरत है पड़े।

हमेशा रखते हैं सब मेरा ध्यान,
देते हैं हर पल एक नया ज्ञान।

यही दुआ है जीवन में मिले सबको ख्याति,
दोस्त रहूंगी हमेशा तुम्हारी सबकी मैं स्वाति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णांजलि

आ रहे जन्मदिन के अवसर पर दे दिया खुद को ही उपहार,
'जीवन धारा' के पढ़ने का भेज दिया सबको ही इश्तिहार।

सोचा ही नहीं था कि होंगे भी पूरे सपने सारे,
देखे थे जो दिन के उजाले में आंखें खोलकर सारे।

इतनी हो गई अपनी 'जीवन धारा' किताब पर मैं फिदा,
छपने पर ऐसा लग रहा, जैसे बेटी हो रही अब घर से विदा।

जिंदगी लेती रहेगी पल-पल पर इम्तिहान कई,
नहीं डगमगाना, रहना है खड़े बन कर चट्टान यूं ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

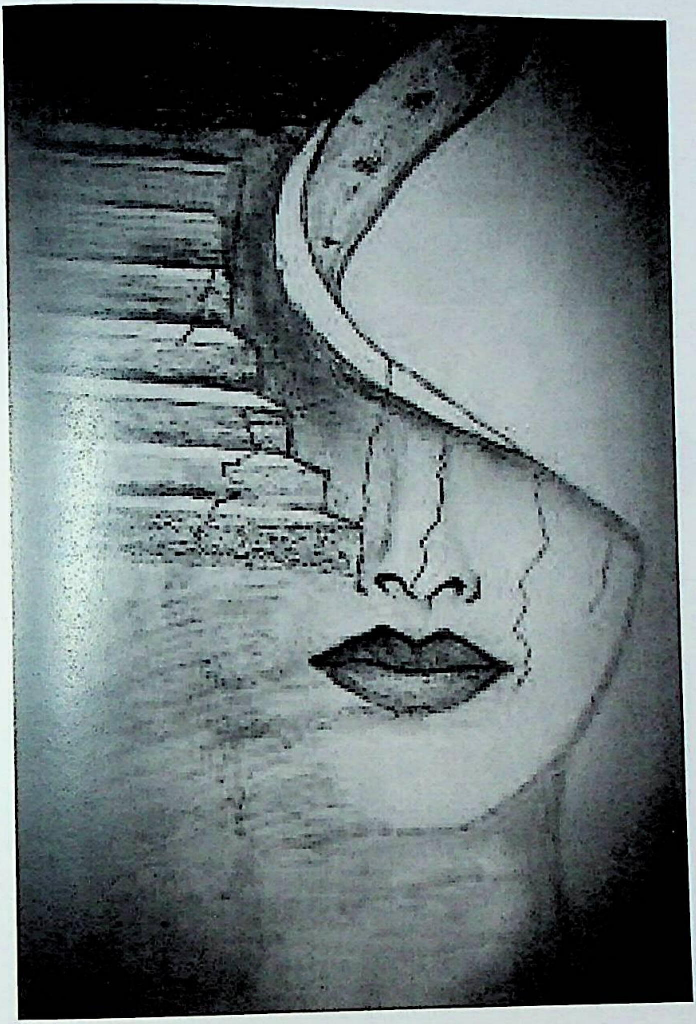

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संवेदना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-3

अभी तो शुरूवात है,
अभी तो ये शब्द निखरेंगे।
दिल के जो जज्बात है,
वो मोती बन के बिखरेंगे।

जब शब्द फड़फड़ाते हैं आकर,
पता नहीं होता किस शाख पर बैठेंगे जाकर।
हर समय बना है शब्दों का एक जाला,
जिसकी बनानी है मुझे एक खूबसूरत माला।

आज फिर जज्बात की आंधी चलेगी,
फिर शब्द भागे-भागे आएंगे।
आज फिर कलियां मुस्कुराएंगी,
और हम फिर पीछे रह जाएंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज फिर सिर्फ पन्ने महकेंगे,
आज फिर सिर्फ शब्द चहचहायेंगे।
आज फिर दिल के भाव उभरेंगे,
और आज फिर शायद दिल में ही रह जाएंगे।

क्यों है ये तड़प मीठी-मीठी,
क्यों है ये धड़कन बढ़ी-बढ़ी।
क्यों है ये दिल बेकरार,
क्या हो गया है मुझे प्यार।

क्यों नहीं मैंने दिल की मानी,
क्यों हो गई आज सबसे बेगानी।
क्या यही खता थी मेरी,
हो गई पहली नजर में तुम्हारी दिवानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गर महफिल में कभी जिक्र हो हमारा,
तो कह देना उनको कि उनका प्यार नहीं है हारा।
बस उसको चाहिए प्यार का सहारा,
जो दिल बार-बार कह रहा है कि ये है तुम्हारा।

कभी शब्दों ने हमको ढूंढा,
कभी हम शब्द ढूंढते रहे।
कभी तन्हाई ना मिली,
कभी तन्हाई को हम न मिले।

आज खोला एक पुराना पिटारा,
जिसे देख-देख दिल हुआ आवारा।
आज भी है उन दोस्तों का सहारा,
जिनके साथ बचपन था गुजारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही जीवन का सार है,
मेरे दिल की सबसे यही पुकार है।
अपनी उड़ानों को मत देना यूं दबा,
चाहे जिन्दगी हो तुमसे कितनी भी खफा।

ये दिल तुम्हारे प्यार में हुआ आवारा,
हर रोज तुम्हारे प्यार में खुद को हारा।
तुम समझो या ना समझो प्यार हमारा,
पर ये दिल फिरता है तुम्हारे लिए मारा मारा।

यही बातें तो मेरे दिल की आवाज है,
यही तो मेरे जीने का अंदाज है।
किसी का तो पता नहीं,
पर मुझे खुद पर नाज है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहां दिल नहीं पहुँचा,
वहां भावों की क्या कद्र।
जहां अल्फाज नहीं पहुँचे,
वहां किताबों की क्या कद्र।

चाहे किसी को हजार ख्वाहिश बताना,
पर उम्मीद किसी से ना रखना।
चाहे इंसान को समझना या ना समझना,
पर टूटी उम्मीदों को जरूर समझना।

जीवन है बहुत रंगों की रंगोली,
सुख-दुख के रंगों से भरी है सबकी झोली।
सबके जीवन में आये ऐसी होली,
खुशियों के रंग भरे सबके हमजोली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये तो जीवन की डोर है,
खिंची तो उलझन हर ओर है।
उलझी तो मन में शोर ही शोर है,
टूटी तो शान्ति चारो ओर है।

ये तो जीवन के रूप है,
कभी छांव तो कभी धूप है।
ये तो वक्त की धूल है,
जिसमें दिया सब कुछ भूल है।

ये जो जिन्दगी का पहिया है,
सही घूमें तो जीवन में खुशियां है।
और जो दिल का दरिया है,
इसमें जो ना डूबा, बस वही बढ़िया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 3

उन मुलाकातों में भी क्या बात थी,
उनमें छुपी-छुपी सी हर कायनात थी।
तब उनकी हर बात में भी बात थी,
जिसके लिए मैं जागी सारी सारी रात थी।

अगर जीवन में एकान्त है,
तो मन एकदम शान्त है।
यही तो जीवन का वृतांत है,
कि इंसान ही इंसान से अशान्त है।

रिमझिम-रिमझिम पानी बरसा,
ना जाने कौन किस-किसको तरसा।
कोई स्वाति नक्षत्र की बूंद को तरसा,
तो कोई जीवन दायिनी इस हवा को तरसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

अब वो वक्त है आया,
जिसे देख हर कोई है घबराया।
समझो सब वक्त की नजाकत,
आ ना जाये कहीं कोई कयामत।

हम तो बस हालातों के मारे हैं,
वरना हम ना कभी किसी से हारे हैं।
चिंताएं बना रही हैं सिर्फ चिताए,
किसी भी बात को कभी दिल से ना लगाएं।

भाव थे जो दिल में भीने-भीने से,
निकले है आज वो धीरे-धीरे से।
भीगी है पलकें बहती है वक्त की धारा,
बह न जाए कहीं हम इनमें फिर दुबारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न जीने देगा ये जालिम वक्त,
जिसका हर पल है बड़ा सख्त
जज्बात की ऐसी आंधी है चली,
दिल के ख्बाब भी ले उड़ चली

जीवन की अब होने को है शाम,
दिल पर मत रखो दर्द के बोझ तमाम
देना है दिल को भी मुझे जवाब,
मत सुन दिल की, दिमाग से ले कुछ काम

ठहरा-ठहरा सा है हर लम्हा,
इस लम्हें में मिलो कभी तन्हा।
तन्हाई करेंगी बातों का हिसाब,
देना पड़ेगा तुम्हें भी तब जवाब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर इंसान में है कुछ करने का जुनून,
तो करना होगा उसे अरमानों का खून।
तभी खिलेंगे जीवन में फूल ही फूल,
तभी मिलेगा जीवन में सच्चा सुकून।

जीवन में जिसके है सिर्फ काँटे,
उससे कोई सुख क्या बाँटे।
पर मुझे रहना है बने खुद्दार,
नहीं लेनी किसी से सांसे उधार।

क्यूँ नहीं मिलता, हीर को राँझा,
क्यूँ टूट जाती है पतंग बिना माँझा।
क्यूँ लिखता है रब सबका मुकद्दर,
शांत मन से सोचो मिलेगा सबका उत्तर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हटती नहीं थी नज़र जिनसे,
नहीं मिलती अब नज़र दिल से।
हमेशा से यही बस चाह रही,
बदल लो खुद को तो मेरी राह तुम्ही।

मैंने तो सिर्फ पन्नों पर दिल के भाव है उतारे,
पर शायद ही ये भाव किसी-किसी ने है स्वीकारे।
मिलते नहीं सभी को जीवन में हैं किनारे,
कुछ को साहिल पर खड़े होकर मिलते हैं सिर्फ सहारे।

ये तो जीवन की टेंढी डगर है,
इसकी नहीं किसी को ख़बर है।
मगर चलना हमें सिर्फ उधर है,
सच की राह दिखे हमे जिधर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहां नहीं होती सच्चाई,
बन जाती है वहां एक खाई।
गर गिर जाए कोई उसमें,
होती नहीं उनकी वाह-वाही।

हर महिला को करना है ये ऐलान,
पूरे वर्ष बनाकर रखनी है अपनी शान।
आने नहीं देनी अपने ऊपर कोई आन,
जो देंगे इज्जत रखना है सिर्फ उनका मान।

होती है जब दिल को आहत,
मिलती नहीं तब मन को राहत।
चाहे कर लो कहीं भी दावत,
मन तो रहता है नदारद-नदारद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो जाएगा एक दिन ये जीवन खत्म,
कह जाएँगे सबकी तारीफ में कुछ हम।
ये वादियाँ ये नजारे सब रहेंगे यूं ही,
ढूँढने से भी न मिलेंगे हम कहीं।

इन जुल्फों को हमेशा न संवारा करो,
कभी-कभी उलझी भी अच्छी लगती है।
तुम यूँ न कलम को अधरों से लगाया करो,
कभी-कभी तो हमें इससे भी जलन होती है।

ये वक्त का दरिया बह जाए,
है तमन्ना कि यूं ही किनारे पर हम रह जाए।
नहीं बहना इस दरिया में,
दिल के अहसास बस दिल में ही रह जाए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन मचले बस नहीं कभी भटके,
आते हैं जीवन में ऐसे भी झटके।
मिलते हैं कुछ लोग बस हटके,
रहना नहीं हमें उनकी परछाई से भी सटके।

समाज सेवा का ऐसा रंग चढ़ा है तीखा,
कर न पाये कोई और रंग अब फीका।
यही तमन्ना है न अब रास्ते भटकाना,
जो मिला है जीवन में बस उसका शुकराना।

आज खुश हूँ बहुत, पर हाथ खाली है,
जेबें हैं भरी, पर बाजार खाली है।
आंखों में ख्वाब है भरे, पर सपने खाली है,
वैसे तो महफिल है भरी, कहने को बस दोस्त खाली है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant

वो हस-हस के दर्द छुपाती है,
वो बातों-बातों में सब कह जाती है।
वो दिल नहीं दिमाग ज्यादा लगाती है,
वो खुद को समझती कम, औरों को ज्यादा समझाती है।

ये पन्ने ही तो है जो कुछ नहीं कहते,
कुछ भी कहो पर पलट कर जबाव नहीं देते।
लोगों ने तो इन शब्दों का भी तूफान बनाया,
ये ही वो पन्ने हैं जिसने वो तूफान अपने अंदर समाया।

जितना भी चाहती हूँ भागना मैं दूर,
उतनी ही हो जाती हूँ यूँ ही मज़बूर।
होगा शायद इसमें भगवान का ही मन जरूर,
जो रहने नहीं देते हमको बातों से यूँ दूर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे कृष्ण मुरारी तुम तो समझते हो मेरे मन की व्यथा,
निकालो इस भंवर से, हो गई है अगर मुझसे कोई खता।
जिंदगी बन गई है कश्मकश से भरी एक कथा,
किसको छोड़ूं किसको पकड़ूं ये अब तू ही बता।

इन लम्हों को उन लम्हों में बन जाने तो लम्हा,
इस वक्त को गुजर जाने दो बस यूं ही तन्हा।
इन लम्हों की बात उन लम्हों में आती है जब याद,
आती है सिर्फ वो यादें, आते नहीं कभी वो लम्हें पास।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

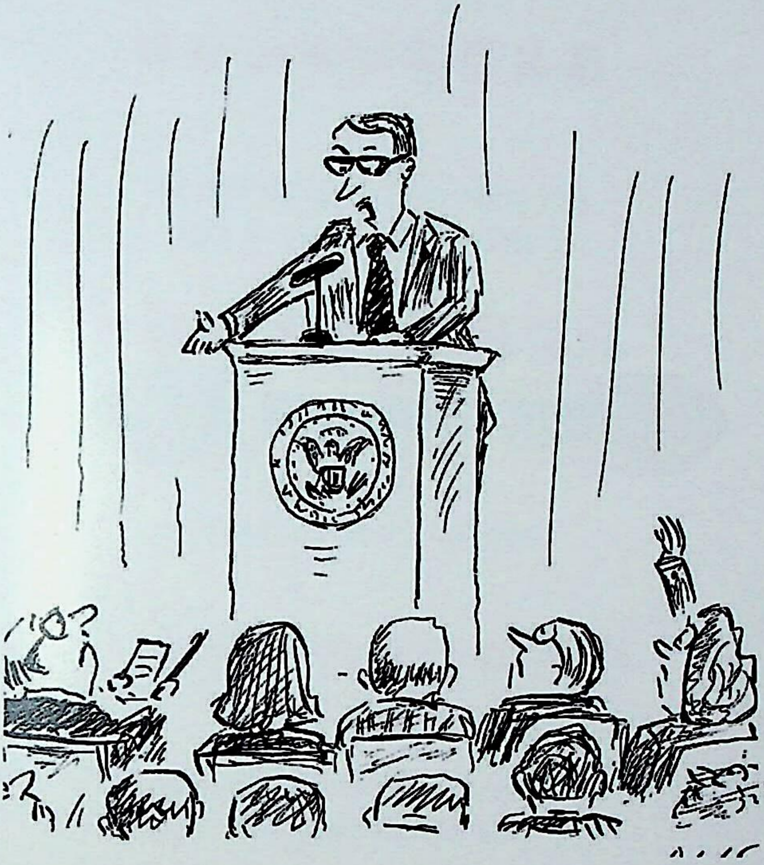

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाह क्या बात है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant

ये लम्हें, ये पल, ये नज़ारे इतने खूबसूरत न होते,
गर इनमें तुम ना होते।

अब संयम नहीं रहा परेशान हो जाती हूँ ज्यादा,
शान्ति से जीवन कटे, यही है बस इरादा।

ईमानदारी है मेरा गहना,
जिसको मुझे हमेशा है पहने रहना।

आसान नहीं है शब्दों को मोती की तरह पिरोना,
पड़ता है कभी खुद को ओर कभी उनको भूलना।

यह जीवन का फलसफ़ा है,
कि कोई खुश और कोई खफ़ा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम लोग कहाँ आकर खड़े हैं आज,
सारी बातें लगती है जैसे एक राज।

दिल की बात है जो जुबां पर आ जाए,
कुछ दिल के अंदर रहे, कुछ बाहर आ जाए।

वो शायरी जो थी सिर्फ तुम्हारी,
छप रही है वो भी अब बारी-बारी।

समेट लूँ बस इन बातों को यादो में,
रोज आकर मिलूँ तुमसे तुम्हारे ख्वाबों में।

सूने शहरों में भी होने लगी है हलचल,
ऐसे ही अपना हुनर तराशों हर-पल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वो जौहरी-जौहरी नहीं जिसे हीरे की परख नहीं,
कद्र का मतलब वो ही जाने, जिनका कोई कद्रदान नहीं।

शब्दों के मोती ढूँढते हैं मौके की तलाश,
बनती है जब माला, होता नहीं कोई हताश।

ख्वाब थे देखे, जो सुनहरे उनकी चाह में,
क्या पता था मिलेंगे इस तरह वो राह में।

कभी जिनको नहीं देखा आँख उठाकर,
आज मिलते हें उनसे आँख मिलाकर।

न नींद आये न चैन मिले,
जब तक उनसे न नैन मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरा है दिल में भावों का सागर,
करना है पार जीवन का भवसागर।

वक्त चाहता है समाज में अब नया बदलाव,
नारी को मिलना ही चाहिए उसका मुकाम।

फिर हुआ है लगाव किताबों से,
जब छूट गए हम जज्बातों से।

जीवन में दुख तो हैं सब पुराने,
पर ढूँढने हैं जीने के अब नये फसाने।

भुलानी है सारी वो बातें पुरानी,
बनानी है जीवन में अब नई कहानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होगा जिसमें देश पर मर मिटने का जज्बा,
बढ़ेगा वही आगे छोड़कर मोह घर का।

करवटें भी जपती रही सारी रात नाम तुम्हारा,
इतना दिया हमने जहन में में है तुमको उतारा।

आँखों में भरा है समंदर,
रहता है बस अंदर ही अंदर।

महसूस किया हमने उन अहसासों को,
उन दहकती सांसों को, उन मचलते जज्बातों को।

फूल तो बहुत मिले हमें जीवन की राहों में,
चुन के रख लिए कुछ दिल के बागानों में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगती है झड़ी शब्दों की रातों को ख़्वाबों में,
बनती है कविता वही दिन के उजालों में।

चलो आज हम इतने खुश हो जाए,
ऐसा न होने आने वाले पल में कही हम ही खो जाए।

किसी-किसी के साथ वक्त का पता ही न चले,
बस लगे कि वक्त यूँ ही थम-थम के चले।

जब बंद हुआ बातों का जरिया सारा,
तब हिचकियों से ही पूछा संदेश तुम्हारा।

मेरी खुशियाँ महलों की मोहताज़ नहीं,
इस बात से मुझको कभी एतराज़ नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुलाकातों में लगता है वक्त थोड़ा कम,
दिल कहे घड़ी अभी थोड़ा और थम।

देखकर उनको सोचती हूं उस पहर,
काश कि ये वक्त जाता यही ठहर।

बस तुम्हें चाहती हूं हमेशा पढ़ना,
अन कहे शब्दों में चाहती हूं तुम्हें गढ़ना।

ना कुछ सूझा ना कुछ समझ आया,
बस दोस्तों में ही अपनापन पाया।

हमेशा सपने हो सारे साकार,
मन ना माने कभी खुद से ही हार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्मीद, प्यार, विश्वास ये सब शब्द है व्यर्थ,
कर्म शब्द में ही है जीवन के सारे अर्थ।

जिन्दगी सैंमल के फूल जैसी लगती है कुछ खास,
जो खुबसूरत तो है बहुत खुशबू की नहीं कोई आस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिचय

कोरोना के महाकाय समय में जैसे अनेक लोगो की जान चली गई वैसे ही। अनगिनत लोगो का जीवन अस्त-व्यस्त भी हो गया। रोजगार बंद हुए, नौकरियाँ चली गई, लोग बीमार होने लगे और बहुत कुछ बुरा हुआ। लेकिन इसी समय में देश के अनगिनत लोगों ने अपने फ़ाज़ल समय का उपयोग करके अपनी ज़िंदगी को एक नया मोड़ भी दिया और कई लोग अपने लक्ष को सिद्ध करने में कामयाब भी हुए।

स्वाति गोयल, एक ऐसा ही नाम है, जिनका काव्य-संग्रह 'जीवन धारा' आज आपके हाथ में है। स्वाति वैसे तो वाणिज्य की शिक्षार्थी है और एम.कॉम. एवं बी.एड. की पढ़ाई की है। विद्यार्थी अवस्था से ही स्वाति को कुछ साहित्यिक सर्जन की इच्छा थी, लेकिन पढ़ाई के वो विपरीत था एवं सामाजिक परिस्थिति भी अलग थी।

स्वाति वैसे तो एक अच्छी बेटी, एक अच्छी पत्नी और एक अच्छी माँ है, लेकिन अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए, समाज और राष्ट्र सेवा में भी अपना समय व्यतीत करती है। राष्ट्रीय सेविका समिति, अखिल विश्व संस्कार समरसता मंच जैसे कई संस्थानों से जुड़कर वह अपनी सेवाकीय प्रवृति करती रही है।

कोरोना के डेढ़-दो साल का समय ऐसा था कि, लोग घर में रहते थे, बाहर जाना असंभव था। इसी समय में स्वाति ने अपनी पुरानी पसंद को मन में लिया और ठान लिया कि, भले ही पहले मैं यह काम नहीं कर सकी लेकिन अभी यह योग्य समय है और स्वाति ने अपनी कविता लेखन का कार्य शुरू किया। व्यक्ति अगर चाहे तो क्या नहीं कर सकता? स्वाति यही बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। स्वाति ने दो साल में 100 से ज्यादा कविताएँ एवं 100 से ज्यादा मुक्तक लिखने का कार्य किया और अपने मन-बुद्धि का अपनी पसंद के लिए योग्य उपयोग करके अपनी तमन्ना को पूरा किया। सालो से दबे हुए अपने विचारो को वाचा दी। 'जीवन धारा' इसी विचार के कुछ अंश है, जो आज एक काव्य संग्रह के रुप में हमारे सामने है। एक गृह लक्ष्मी से समाज सेविका और अब कवयित्री तक का कठिन सफर उन्होंने आसानी से सम्पन्न किया।

शिवांक प्रकाशन
4598/12बी, प्रथम-तल, गोला कॉटेज
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष: 011-43586184, मो.: 9811734184
ई-मेल: shivank.prakashan@gmail.com
website : www.dpspublishinghouse.com
SCAN QR CODE
₹495/-
ISBN:978-93-93285-85-0
9 789393 285850

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.